



- यह ज्ञान के संचरण और बुद्ध की शिक्षाओं के संचार का प्रतीक है।
- **वरद मुद्रा:** इस मुद्रा में दाहिना हाथ नीचे की ओर फैला होता है, जिसमें हथेली बाहर की ओर होती है।
  - यह उदारता, करुणा और इच्छाओं को पूरा करने का प्रतीक है।
- **अभय मुद्रा:** इस मुद्रा में दाहिना हाथ को कंधे की ऊँचाई तक ऊपर उठाना शामिल है, जिसमें हथेली बाहर की ओर होती है।
  - यह नडिरता, सुरक्षा और नकारात्मकता को दूर करने का प्रतीक है।
- **भूमिस्पर्श मुद्रा:** इस मुद्रा में दाहिना हाथ की उँगलियों से ज़मीन को छूना शामिल है, जबकि बायाँ हाथ गोद में रहता है।
  - यह बुद्ध के ज्ञानोदय के क्षण को प्रदर्शित करता है और ज़मीन की तरफ संकेत पृथ्वी उनके ज्ञानोदय की साक्षी की प्रतीक है।
- **उत्तरबोधी मुद्रा:** इस मुद्रा में दोनों हाथों को जोड़ कर हृदय के पास रखा जाता है और तर्जनी उँगलियाँ एक-दूसरे को छूते हुए ऊपर की ओर होती हैं तथा अन्य उँगलियाँ अंदर की ओर मुड़ी होती हैं, जिससे त्रिभुज के आकार का निर्माण होता है।
  - यह मुद्रा ज्ञान और करुणा के संगम, पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व ऊर्जा के संतुलन तथा स्वयं के सभी पहलुओं के एकीकरण के माध्यम से ज्ञान प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करती है।
- **धर्मचक्र मुद्रा:** इसमें हाथों को हृदय के सामने रखा जाता है और प्रत्येक हाथ के अँगूठे और तर्जनी से एक वृत्त का निर्माण किया जाता है। प्रत्येक हाथ की शेष तीन उँगलियाँ ऊपर की ओर होती हैं, जो बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों- बुद्ध, धर्म (उनकी शिक्षाएँ) और संघ (अनुयायियों का समुदाय) का प्रतिनिधित्व करती हैं। अँगूठे और तर्जनी द्वारा निर्मित वृत्त धर्म चक्र का प्रतिनिधित्व करता है।
  - यह मुद्रा जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के नरितर चक्र तथा बुद्ध की शिक्षाओं को इस चक्र से मुक्त होने के साधन के रूप में दर्शाती है।
- **करण मुद्रा:** इसमें बायाँ हाथ हृदय तक ऊपर लाया जाता है और हथेली आगे की ओर होती है। तर्जनी तथा छोटी उँगलियाँ सीधी ऊपर की ओर संकेत करती हैं, जबकि अन्य तीन उँगलियाँ हथेली की ओर मुड़ी हुई होती हैं।
  - यह मुद्रा अक्सर बुद्ध या बोधिसत्व के चित्रण में देखी जाती है, जिसे सुरक्षा और नकारात्मकता को दूर करने के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। कहा जाता है कि तर्जनी ज्ञान की ऊर्जा और बाधाओं को दूर करने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है।
- **ज्ञान मुद्रा:** इसमें तर्जनी और अँगूठे को एक साथ लाकर एक वृत्त का निर्माण किया जाता है, जबकि अन्य तीन उँगलियों को बाहर की ओर रखा जाता है।
  - यह इशारा सार्वभौमिक चेतना के साथ व्यक्तिगत चेतना की एकता और बुद्ध की शिक्षाओं के मध्य व्यावहारिक संबंध का प्रतिनिधित्व करता है।
- **तर्जनी मुद्रा:** इसमें तर्जनी उँगुली को ऊपर की ओर बढ़ाया जाता है, जबकि अन्य उँगुलियों को हथेली की ओर मोड़ा जाता है। तर्जनी मुद्रा, जिसे "भय के इशारे" के रूप में भी जाना जाता है।
  - इसका उपयोग बुरी ताकतों या हानिकारक प्रभावों के खिलाफ चेतावनी या सुरक्षा के प्रतीक के रूप में किया जाता है।





### Bhumisparsha Mudra

Touching the earth as Gautama did, to invoke the earth as witness to the truth of his words.



### Varada Mudra

Fulfilment of all wishes; the gesture of charity.



### Dhyana Mudra

The gesture of absolute balance, of meditation. The hands are relaxed in the lap, and the tips of the thumbs and fingers touch each other. When depicted with a begging bowl this is a sign of the head of an order.



### Abhaya Mudra

Gesture of reassurance, blessing, and protection. "Do not fear."



### Dharmachakra Mudra

The gesture of teaching usually interpreted as turning the Wheel of Law. The hands are held level with the heart, the thumbs and index fingers form circles.



### Vitarka Mudra

Intellectual argument, discussion. The circle formed by the thumb and index finger is the sign of the Wheel of Law.



### Tarjani Mudra

Threat, warning. The extended index finger is pointed at the opponent.



### Namaskara Mudra

Gesture of greeting, prayer, and adoration. Buddhas no longer make this gesture because they do not have to show devotion to anything.



### Jnana Mudra

Teaching. The hand is held at chest level and the thumb and index finger again form the Wheel of Law.



### Karana Mudra

Gesture with which demons are expelled.



### Ksepana Mudra

Two hands together in the gesture of 'sprinkling' the nectar of immortality.



### Uttarabodhi Mudra

Two hands placed together above the head with the index fingers together and the other fingers intertwined. The gesture of supreme enlightenment.

//

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. भगवान बुद्ध की प्रतमि कभी-कभी एक हस्त मुद्रा युक्त दिखाई गई है, जसि 'भूमसिपरश मुद्रा' कहा जाता है। यह कसिका प्रतीक है?

- (a) मार पर दृष्टरिखने एवं अपने ध्यान में वधिन् डालने से मार को रोकने के लयि बुद्ध का धरती का आह्वान
- (b) मार के प्रलोभनों के बावजूद अपनी शुचिता और शुद्धता का साक्षी होने के लयि बुद्ध का धरती का आह्वान
- (c) बुद्ध का अपने अनुयाययिों को स्मरण कराना कवि सभी धरती से उत्पन्न होते हैं और अंततः धरती में वलीन हो जाते हैं, अतः जीवन संक्रमणशील है

(d) इस संदर्भ में दोनों ही कथन (a) एवं (b) सही हैं

उत्तर: (b)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/sandalwood-buddha-statue>

